Date
Page

Subject - Philosophy
Class - B.A. Part III (Hons)
Paper - V

ईश्वरवाद और अशुभ की समस्या

⇒ ईश्वरवादियों ने अशुभ की व्याख्या करते समय विभिन्न तर्कों का प्रयोग किया है। अब हम उन तर्कों पर विचार करेंगे।

अशुभ मानव संकल्प स्वातंत्र्य के दुरुपयोग का परिणाम है।
(Evil is due to the misuse of human free will). कुछ ईश्वरवादियों (Theists) का कहना है कि ईश्वर ने मानव को संकल्प स्वातंत्र्य (freedom of will) प्रदान किया। मानव ने संकल्प स्वातंत्र्य का दुरुपयोग किया जिसके फलस्वरूप अशुभ का विकास हुआ। ईसाई धर्म ने भी अशुभ को मानव संकल्प स्वातंत्र्य का दुरुपयोग कहा है। इस धर्म के अनुसार ईश्वर ने लोगों को संकल्प

स्वातंत्र्य दिया जिससे वे स्वतंत्रता-पूर्वक किसी एक संकल्प को चुनने में समर्थ हो सकें। चूँकि मानव ने ईश्वर के प्रति अनादर या घृणा का प्रदर्शन किया जिसके फलस्वरूप संसार में अशुभ व्याप्त है। अतः अशुभ का कारण स्वयं मानव है।

उपर्युक्त विचार का ~~सम~~ समर्थन मिल ने भी किया है। मिल ने अशुभ का कारण मनुष्य की स्वतंत्रता को माना है। उन्होंने कहा है "संसार में अशुभ मनुष्य की दुष्टता के कारण पैदा होता है। मनुष्य स्वतंत्र है जिसका मतलब यह है कि वह शुभ और अशुभ दोनों कार्यों को करने के लिए स्वतंत्र है। इस प्रकार अशुभ मनुष्य की स्वतंत्रता का एक अपरिहार्य परिणाम है।"

आलोचना

इस युक्ति के विरुद्ध में आवाज उठाते हुए कान्ट और कोसांकेत ने कहा है कि यह मान लेने पर कि ईश्वर ने संकल्प

स्वातंत्र्य दिये। उसने संकल्प स्वातंत्र्य के साथ ही दो विकल्प भी अवश्य रखे होंगे। इससे सिद्ध होता है कि अशुभ की सृष्टि ईश्वर ने विचार स्वातंत्र्य के साथ ही की होगी।

यदि यह मान भी लिया जाए कि अशुभ मानव संकल्प स्वातंत्र्य के गलत प्रयोग का परिणाम है फिर भी इससे सिर्फ नैतिक अशुभ की व्याख्या होती है। प्राकृतिक अशुभ (natural evils) जैसे आँधी, तूफान इत्यादि की व्याख्या नहीं हो पाती है। अतः यह व्याख्या संतोषप्रद नहीं प्रतीत होती है।

प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ के लिए दण्डमात्र है (Natural evil is punishment for moral evil) -

ईश्वर ने मानव की रचना की है परंतु मानव उनके आदेशों का पालन नहीं कर सका। ईश्वर के नैतिक

नियमों का मानव ने उल्लंघन
किया जिससे क्रोधित होकर
प्रताड़न की भावना से ईश्वर
ने अशुभ का निर्माण किया।
भूकंप, बाढ़, बाघ, भूख, आदि
ईश्वर के द्वारा भेजे गए है
जिनसे मानव को कष्ट होता है।

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
Ara.